

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-B

खण्ड 'क'

1. (क) देश वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षेत्र में आशातीत प्रगति कर रहा है। 1×10=10

(ख) प्रगति से सम्बन्धित धुँधला पक्ष भौतिकता का पहलू है। भ्रष्टाचार देश की प्रगति व मान-सम्मान के लिए शर्मनाक बात है।

(ग) नैतिक चरित्र मनुष्य की निजी सम्पदा है। सत्य, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठ और मानवीय भावनाएँ देश ही नहीं मनुष्य के व्यक्तिगत विकास के लिए जरूरी है। ये ही नैतिक चरित्र के परिचायक हैं।

(घ) यदि देशवासियों में नैतिक चरित्र और देश के मान-सम्मान की भावना नहीं हो तो देश की प्रगति निरर्थक हो सकती है।

(ङ) नैतिकता अर्थात् सत्य, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा को आत्मसात करके चरितार्थ करने वाले व्यक्ति विद्यमान हैं। समय-समय पर निस्वार्थ देश प्रेमी व कतिपय महापुरुष भी इस सम्बन्ध में जनता को जागरूक करते रहते हैं। मानवीय भावनाओं का ध्यान रखने हेतु विभिन्न कार्यक्रम व योजनाएँ भी बनाई और लागू की जा रही हैं। पूर्णतः तो नहीं पर कुछ अंशों में कामयाबी ही नैतिकता को जीवित रखे हुए है।

(च) दृढ़-संकल्प और उचित मानसिकता से ही अनैतिक पहलू से मुक्ति पाई जा सकती है।

(छ) प्रगति और नैतिकता अथवा भ्रष्टाचार से मुक्त समाज का निर्माण।

(ज) श्याम को बिना हथेली गर्म किए नियुक्ति-पत्र नहीं मिल पाया।

(झ) (i) नैतिक + ता (ii) ईमानदार + ई

(ज) लोग इसी को राष्ट्रीय चरित्र मान बैठे हैं।

2. (क) कठिनाई, दुःख, कष्ट, असफलताएँ आदि से जीवन समस्याग्रस्त हो जाता है। संघर्ष आवश्यक हो जाता है। ऐसे में सारी प्रकृति (सागर, आकाश, हवा) कष्टदायक लगती है। केवल मन की दृढ़ता व साहस से कालजयी बन कर उनका दमन करना होता है।

(ख) बाह्य शीलता से मन के ताप को शान्त नहीं किया जा सकता है। कवि जीवन की समस्याओं (रूकावटों, क्लेशों, कंकटों) को साहस से सुलझाने और शान्त भाव से जीवन पथ पर बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

(ग) जीवन में अटल नेह से जीवन के प्रति प्रेम व आसक्ति बढ़ती है। साहस मनुष्य की वह अमूल्य विशेषता है जो हर परिस्थिति में सामना करके सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है।

(घ) मनुष्य को झरने के समान सदैव अग्रोन्मुखी रहना चाहिए। वह निर्मल भाव से उछलते-कूदते लोगों की प्यास बुझाते हुए निरन्तर बहता रहता है। लोगों के धन्यवाद, ज्ञापन के लिए भी नहीं रुक सकता केवल परमार्थ में भी लगा रहता है। इसी प्रकार पहाड़ी बर्फ भी निरन्तर परमार्थ से पिघल-पिघल कर जल-पिपासा शान्त करती है। इनसे प्रेरणा मिलती है कि परमार्थ में ही अपने अस्तित्व की सार्थकता है।

(ङ) मनुष्य को जीवन की कठिनाइयों का अटल स्नेह व साहस से सामना करना चाहिए। संघर्ष के गर्भ में विजय निहित होती है।

परहित को अपना धर्म व जीवन की सार्थकता मानते हुए आसक्तिहीन रह कर जीवन-यापन करना चाहिए।

अथवा

(क) कवि देश की माटी को प्रणाम कर रहा है। कवि देश-प्रेमी है। वह देश के प्रति कृतार्थता व्यक्त करते हुए पवित्र देश (भारत ऋषि-मुनियों की साधना स्थली रही है) की माटी को मस्तक पर लगाकर नमन करता है।

(ख) मातृभूमि को प्रणाम करके सारे कष्ट विस्मृत हो जाते हैं। शरीर को पूर्ण विश्राम मिल जाता है और स्फूर्ति व शक्ति का पुनः संचार हो उठता है।

(ग) देश की माटी से सान्निध्य न रहने पर कवि मन बैचेन होकर पुनः दर्शन के लिए व्याकुल हो उठता है। वही पुनः मिलन से जीवन की सार्थकता प्रतीत हुई जैसे साधना के पश्चात् भक्त को उसके आराध्य मिल गए हो।

(घ) जिस प्रकार पारस के स्पर्श से वस्तु का मूल्य बढ़ जाता है वैसे ही देश की माटी के स्पर्श से कवि को सचेत नवजीवन प्राप्त हो जाता है। वह अधिक तत्परता से देश की सेवा साधना में अपने को समर्थ अनुभव करता है।

(ङ) “माटी, तूझे प्रणाम।”

खण्ड 'ख'

3. मोबाइल बिना सब सूना

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने मानव को अनेक तरह से उपकृत किया है। विज्ञान अलादीन के जादुई चिराग की तरह है जो माँगों वहीं मिल सकता है। संचार माध्यमों में भी विज्ञान ने अधिक क्रान्ति की है।

आज से कुछ वर्षों पूर्व इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि हम किसी से बात करने के लिए या किसी का संदेश सुनने के लिए किसी छोटे-से यंत्र को अपने हाथ में लेकर घूमेंगे। इस छोटे से यंत्र का नाम है मोबाइल फोन जो हमारे लिए वरदान भी है और कभी-कभी असुविधा का कारण भी।

मोबाइल फोन से जहाँ चाहें, जिससे चाहे, देश या विदेश में कुछ ही क्षणों में अपना संदेश दूसरों तक पहुँचाया जा सकता है और उसकी बात सुनी जा सकती है। यही नहीं इस उपकरण से (एस.एम.एस.) संदेश भेजे और प्राप्त किए जा सकते हैं। इस उपकरण से तरह-तरह के खेल, खेले जा सकते हैं, गणनाएँ की जा सकती हैं। मित्रों एवं सम्बन्धियों के फोन नम्बर संचित किए जा सकते हैं। समाचार, चुटकुले, संगीत आदि का आनन्द लिया जा सकता है। किसी भी तरह की विपत्ति में मोबाइल फोन रक्षक बनकर हमारी सहायता करता है। तेजी से बदलती दुनिया में संचार-क्षेत्र में चमत्कारिक परिवर्तन हुए हैं। इन्हीं परिवर्तनों की एक कड़ी मोबाइल-सेवा है। मोबाइल फोन त्वरित संप्रेषण का मुख्य साधन है। मोबाइल लोगों के लिए एक आवश्यक वस्तु बनती जा रही है। इस सुविधा का उपयोग करने के बाद इसके बिना अधूरेपन का अहसास होता है। मानव का जीवन इस सेवा में आसान हो गया है।

दूरभाष से भी अधिक बड़ी क्रान्ति की है मोबाइल फोन ने। यह छोटा-सा यंत्र धारक की जेब में रहता है। इसकी सहायता से पूरा विश्व हर कदम पर उसके संग रहता है और वह भी विश्व के लिए उपलब्ध रहता है। लैंड-फोन के लिए तो व्यक्ति का घर या कार्यालय होना आवश्यक है, परन्तु मोबाइल तो चलता-फिरता एटलस है। सचमुच मोबाइल के रहते दुनिया हमारी मुट्ठी में रहती है। यह धीरे-धीरे मध्यम वर्ग का लोकप्रिय साधन बनता जा रहा है। इसने मिस्त्री, ठेकेदार, बिजली-मैकेनिक तथा अन्य छोटे कारीगरों की दुनिया बदल डाली है। इससे उन्हें काम-धंधा मिलने में बहुत आसानी होने लगी है।

वर्तमान में मोबाइल फोन में इतनी सुविधाएँ आ गयी हैं कि प्रयोग करने वाला सारा दिन व्यस्त रहता है। एस.एम.एस., रेडियो, खेल, कैमरा, टेपरिकार्डर आदि अनेक सुविधाएँ लोगों को आकर्षित करती हैं। हम इसके जरिये एक-दूसरे के सम्पर्क में रहते हैं। आज इन्तजार का जमाना नहीं, आज चिट्ठी-पत्री का काम मोबाइल के माध्यम से होता है। धीरे-धीरे ये सेवा सामाजिक प्रतिष्ठा का विषय बन गयी है। बच्चे, बूढ़े, युवा, महिला हर किसी की जेब में मोबाइल बजता दिखाई देता है। अनेक सुविधाएँ होते हुए भी मोबाइल फोन असुविधा पैदा करता है। गलत एस.एम.एस. भेजकर समस्या पैदा की जाती है तथा फोटो खींचकर परेशानी बढ़ती है।

4. सेवा में,

जनगणना आयुक्त
जिला कानपुर।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि आपको 2010-11 की जनगणना के लिए कुछ सहायकों की आवश्यकता है। मैं इस पद हेतु एक अभ्यर्थी हूँ। मेरी योग्यता, रुचि आदि का विवरण इस प्रकार है—

1. नाम — सुशील त्रिवेदी
2. पिता का नाम — श्री सुनील त्रिवेदी
3. स्थायी पता — 219, चन्द्र नगर, कानपुर।
4. शैक्षिक योग्यता — बी.ए. (अर्थशास्त्र सहित)
5. जन्मतिथि — 16 मई, 1990
6. रुचि — समाज सेवा, जनगणना, खेलकूद आदि।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अपने कार्य को ईमानदारी, परिश्रम व कर्तव्यनिष्ठा से करूँगा।

आशा है आप मुझे अवसर प्रदान करने की कृपा करेंगे। मैं आपका आभारी रहूँगा।

प्रार्थी,
सुशील त्रिवेदी
दिनांक :

अथवा

सेवा में
स्वास्थ्य अधिकारी
जनपद आगरा।

महोदय,

निवेदन है कि हमारे जनपद में बाढ़ उतर जाने के बाद नदी के तट पर बसी बस्तियों में हैजा, मलेरिया, डेंगू जैसे संक्रामक रोग फैलने लगे हैं। गरीबी के कारण वे अपना इलाज कराने में असहाय अनुभव करते

हैं। अतः उनके इलाज हेतु तुरन्त व्यवस्था करने की कृपा करें। प्रायः चिकित्सकों से वहाँ कैम्प लगाने का प्रबन्ध करें तथा उचित दवा व छिड़काव की कमी न होने दें। गम्भीर रोगियों की चिकित्सा जिला अस्पताल में कराने की व्यवस्था करें।

सधन्यवाद।

भवदीय,

सुनील कुमार वर्मा

यमुना पारक्षेत्र, अगरा

दिनांक :

5. (i) छापेखाने का आविष्कारक जर्मनी का जोनिस गुटेनवर्ग था।

(ii) मुद्रित माध्यमों की एक विशेषता-चिन्तन, विचार और विश्लेषण है।

(iii) पूर्णकालिक पत्रकार वह होता है जो किसी अखबार में स्थायी रूप से मासिक वेतन पर नियुक्त किया जाता है। वह अपने द्वारा किये गये कार्य के प्रति उत्तरदायी भी होता है।

(iv) विशेष लेखक से तात्पर्य है—किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। इसकी न सिर्फ शैली अलग होती है बल्कि भाषा भी विशिष्ट होती है।

(v) समाचार-पत्र में सम्पादक का मुख्य कार्य समाचार-पत्र का प्रारूप तैयार करना होता है। सम्पादकीय पिछले दिन घटी प्रमुख राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं पर वैचारिक टिप्पणी होती है। इसमें घटना का विश्लेषण कर आगामी प्रभाव का विवेचन किया जाता है।

6. बाढ़ की विभीषिका (रिपोर्ट)

इस बार हुई भीषण वर्षा के कारण कोसी नदी का जल अपनी सीमाओं को तोड़ता हुआ उफन पड़ा था। कोसी जैसे अपने होश में नहीं थी संयमहीन होकर मर्यादा तजकर यह मदोन्मत्त-सी बनी प्रलय बचाने के लिए कटिबद्ध थी। उसके दोनों किनारे टूट गये और जल की तीव्र धाराएँ भयंकर गर्जना करती हुई चारों ओर फैल गयीं थी। चारों ओर मानो जल ही जल छा गया जैसे समुद्र ने पृथ्वी को अपने अंग में लपेट लिया हो। किनारे के गाँव उस बाढ़ में डूब गये, खेतों में झूमती हुई फसलें वरुण देव की भेंद चढ़ गई। जिन फसलों को किसानों ने अपने खून-पसीने से सींचा था, उनकी आशाएँ, अभिलाषाएँ, मुस्कुरा रही थी, निर्दय हृदय वाली घाघरा ने उन पर तनिक भी दया, ममता नहीं दिखलाई अपने बड़प्पन पर इठलाने वाले बड़े-बड़े वृक्ष भी कोसी की चपेट में आने से न बच सके जल के तीव्र आघातों ने उन्हें समूल उखाड़ फेंका। बाढ़ के इस प्रलयकारी रूप से चारों ओर हा-हाकार मच गया। गाँव के गाँव बाढ़ में डूबने लगे। झोपड़ियाँ बह गई और बड़े-बड़े मकान धराशायी हो गये। गाय, बैल आदि पशुगण क्षुद्र जीव-जन्तुओं की भाँति जल में तैरने लगे। आज कोई भी उन्हें बचाने वाला नहीं था। बचाता भी कौन जबकि सबको स्वयं अपने प्राणों के ही लाले पड़े हुए थे। माताओं की गोद से उनके बालक बिछुड़ गये थे। कई परिवार बिल्कुल ही डूब गये। बड़ा भीषण दृश्य था। स्त्रियों का आर्तनाद, अबोध बालकों की चीत्कार, घायलों और पीड़ितों की चीत्कार ने वातावरण की भयंकरता को और भी अधिक तीव्र बना दिया था।

जनसेवक जनता जर्नादन की सेवा के लिए कर्तव्यबद्ध दीख पड़े। प्रशासन के प्रयास भी चर्चा में रहे परन्तु वास्तविक पीड़ितों को

अभी तक भी पर्याप्त सहायता नहीं मिल पायी है। आशा है शीघ्र ही प्रभावकारी आपात प्रयास शुरू किए जायेंगे।

अथवा

फीचर—मैट्रो रेल हमसे सुसभ्य और सुसंस्कृत व्यवहार की अपेक्षा रखती है (फीचर)

दिल्ली मैट्रो सभी प्रकार की सुविधाओं से सम्पन्न है। यह मैट्रो विश्व की एक आधुनिक सेवा है और यह हमें सिंगापुर और हांग-कांग तुल्य सुविधाओं का अहसास कराती है। यह समस्त प्रणाली स्वचालित है। यात्रियों की सुविधाओं के मद्देनजर सभी भूमिगत स्टेशनों पर उचित वातानुकूलन सुरंगों में जरूरी वेंटिलेशन किया गया है। सभी स्टेशनों को आधुनिक सुविधाओं से लैस किया गया है। ट्रेनों के आवागमन की जानकारी के लिए घड़ियाँ सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली तथा सी.सी. टी.वी. की व्यवस्था की गयी है। स्टेशनों पर ऑप्टिकल फाइबर लाइन द्वारा दूर संचार प्रणाली का प्रबन्ध किया गया है। इन केबलों में ध्वनि व डाटा प्रेषण की क्षमता है। विभिन्न काउण्टरों पर यात्रियों के लिए स्मार्ट कार्ड उपलब्ध रहेंगे। प्रवेश व निकास के लिए माइक्रोप्रोसेसर नियंत्रित स्वचालित दरवाजे बनाए गए हैं। व्यस्ततम समय में प्रति तीन मिनट के अंतराल पर ट्रेनों को चलाए जाने के लिए अपनी तरह की अनोखी सतत! स्वचालित ट्रेन सिग्नलिंग प्रणाली की व्यवस्था की गयी है। इस प्रणाली के प्रयोग से मैट्रो कॉरीडोर में प्रति दो मिनट के अंतराल पर ट्रेनें चलाई जा सकती हैं। विकलांग लोगों की सुविधा व सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उन्नत तकनीक युक्त कुल 48 एलीवेटर्स (लिफ्ट) का प्रबन्ध किया गया है।

मैट्रो रेल में नागरिकों के लिए आवश्यक है कि वे लाइन में खड़े हों। 15 किलो से ज्यादा सामान लेकर न चढ़ें। कूड़ेदान में ही कूड़ा डालें। एस्केलेटर के बायीं ओर ही खड़े हों और चलते समय दायीं ओर रहें। विकलांगों की सहायता करें। शराब पीकर यात्रा न करें। स्टेशन परिसर में खाने की वस्तुएँ न लाएँ। धूम्रपान न करें। बगैर स्मार्ट कार्ड या टोकन के यात्रा न करें। अंधे लोगों के लिए बनाए गए रास्ते पर न चलें तथा अपंगों के लिए बनाई गई लिफ्ट का प्रयोग न करें। रेल में सुसभ्य और सुसंस्कृत व्यवहार करें।

अथवा

वेलेंटाइन डे : शहरी युवाओं का त्यौहार (आलेख)

भारत त्यौहारों का देश है। यहाँ विभिन्न प्रकार के त्यौहार मिलजुल कर मनाए जाते हैं। होली, दीवाली, दशहरा, रक्षाबंधन, 15 अगस्त, 26 जनवरी, क्रिसमस दिवस आदि त्यौहारों पर लोगों का उल्लास व आनन्द देखते ही बनता है। सारा देश त्यौहार की खुशी में मग्न दिखाई देता है। परन्तु पिछले कुछ वर्षों से भारत में 14 फरवरी को वेलेंटाइन डे के नाम से मनाया जाने लगा है। विशेष रूप से शहरी युवाओं में इसका चलन बड़ी तेजी से निरन्तर बढ़ता जा रहा है। यह त्यौहार प्यार को व्यक्त करने के रूप में विशेष रूप से मनाया जाता है। अतः युवा वर्ग इस दिन को लेकर काफी उत्साहित होता है। इस दिन युवा लड़के-लड़कियाँ अपने मित्रों को, अपने प्रेमियों को कुछ-न-कुछ उपहार देकर अपने प्रेम को व्यक्त करते हैं। इस दिन के लिए कई दिनों पूर्व ही बाजारों में तरह-तरह के उपहार और ग्रीटिंग कार्ड्स की भरमार देखी जा सकती है। खरीदारी

के लिए लोग बाजारों में घूमते दिखाई देते हैं। इस प्रकार युवा वर्ग इस दिन विशेष रूप से अपने मन की इच्छाएँ पूर्ण करने के लिए आतुर रहता है। अब तो हर आयु वर्ग के लोग भी इस त्यौहार में सम्मिलित होने लगे हैं।

खण्ड 'ग'

7. (क) (i) कविता में संथाल परगना और झारखण्ड का प्रभाव दीखता है।

(ii) शहरी प्रभाव से मुक्त प्राकृतिक सरल जीवन शैली, उत्साह और उमंग से परिपूर्ण कर्म व तेजस्विता युक्त जन-जीवन की अपेक्षा की जा रही है।

(iii) माटी का रंग सांस्कृतिक विशेषता का परिचायक है।

(iv) आन्तरिक जोश और जुझारूपन ही भीतर की आग है। जो सभी गतिविधियों को संचालित करती है।

(ख) (i) पत्नी को पैर की जूती के समान नगण्य माना जाता है। यहाँ कलुषित सामाजिक मान्यता पर व्यंग्य है।

(ii) किसान को अपनी पतोहू की मृत्यु पर उतना दुःख नहीं है जितना अपने पुत्र की मृत्यु पर, क्योंकि वहीं उसके बुढ़ापे की लाठी था। अति प्रिय था। पतोहू तो एक मरी तो दूसरी आ सकती थी।

(iii) किसान को लहलहाते खेत, भरपूर घर-द्वार, बैल, गाय, बेटा-पतोहू, पत्नी-पोती सभी सुखदायी थे। ये सब सुख उसकी आँखों में चमक सी भर देते थे।

(iv) जब आज किसान अपने को लुटा-पिटा, दीनहीन व विवश पाता है तो सुखों को याद करके सोच में पड़ जाता है और उसकी चितवन धारदार नोक के समान अविलम्ब शून्य में खो जाती है।

8. भाव सौन्दर्य—कवि ने दबे-कुचले भारतीयों की संतोषी वृत्ति और उदासीनता का भाव मुखरित किया है। पर्याप्त वस्त्र के अभाव में भी संघर्ष नहीं करते। धार्मिक लोग भगवान पर दिखावटी आस्था रखते हुए उसे वक्त गुजारने का मनमोहन नजारा ही मानते हैं। वास्तव में सही मानसिकता व सही आचरण ही आवश्यक होता है।

शिल्प सौन्दर्य—भाषा में सरलता एवं प्रवाहमयता है। उर्दू के शब्दों का सार्थक प्रयोग हुआ है। पाँवों से पेट ढकने का विम्ब अत्यन्त मनोहारी बन पड़ा है। ओज गुण की प्रधानता है। कविता में संगीतमयता है। 'गजल' छन्द का प्रयोग हुआ है।

अथवा

भाव-सौन्दर्य—आज के इस परिवेश में जब विनाश ही विनाश है तो ऐसे में जीवन की जरूरी चीजों का बचाना अनिवार्य है। मन के जोश और उमंग को हमें अपने सुनहरे भविष्य के लिए बचाए रखना है।

शिल्प सौन्दर्य—जीवन के यथार्थ का वर्णन है। यह काव्य पंक्ति लाक्षणिक है। आशय है—उत्साहहीन जीवन, गर्माहट, उमंग व आशा का प्रतीक है—अभिव्यक्ति में अर्थ—गौरव मुखरित है। तत्सम प्रधान शब्दावली है। खड़ी बोली के मानक रूप का प्रयोग है। छन्दमुक्त और अतुकान्त होते हुए भी इसमें अद्भूत आकर्षण है।

9. (क) कबीर ने स्वयं को दीवाना इसलिए कहा है, क्योंकि उसने अपने भीतर छिपे परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया है। अतः वह

सच्चा साधक हो गया है। संसार के राग-द्वेष से, लाभ-हानि से, मोह-माया से दूर हो गया है। अब वह निर्भय हो गया है।

(ख) चम्पा का अक्षर ज्ञान रहित होना दुखदायी है, वह अक्षरों के स्वरों को समझ नहीं पाती। पढ़े-लिखे लोगों को झूठा समझती है और इसलिए स्वयं पढ़ना भी नहीं चाहती। वह सत्य-दर्शन नहीं कर पाती।

(ग) कवयित्री ने ईश्वर के लिए जूही के फूल का दृष्टान्त प्रयुक्त किया है। जूही का फूल कोमल, सुगन्धित व प्रसन्नतादायक होता है। ईश्वर भी दयालु, पवित्र भावपूर्ण (करुणामय) और आनन्द स्वरूप होता है।

(घ) यह कविता 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के दौरान जब कवि कारावास में थे, रची गयी।

कवि के मन और प्राण घर की यादों में घिर गए हैं। उन्हें माता-पिता के दुःखों व अश्रुओं के लिए दुःख है। कवि सावन से प्रार्थना करता है कि वे उनके परिवार को शान्त व सुखी रखे और बेटे की सलामती के लिए आश्वस्त करे। बेटे की उदासी, मौन और बेचैनी को गलती से भी न बताए।

10. (क) दबे हुए आदमी ने पेड़ काटने की कार्यवाही पर देर होती देखी तो उसने आह भरते हुए गालिब का एक शेर पढ़ा। इसे सुनते ही माली ने उससे पूछा कि क्या वह शायर है और उसने स्वीकृति में सिर हिलाया। इस प्रकार पहले माली को शायर होने की जानकारी हुई।

(ख) शायर के पेड़ के नीचे दबने का समाचार सुनकर सचिवालय में नगर के सब कवि, शायर और कविता प्रेमी, क्लर्क तथा सचिव एकत्र होने लगे, लगा कोई कवि सम्मेलन होने जा रहा हो। कुछ शायर उसे अपनी कविता सुनाने लगे। कई क्लर्क उसे अपनी कविता पर आलोचना करने के लिए कहने लगे।

(ग) लोग कौतुहल प्रिय तथा तमाशाबीन हैं। वे कवि के पेड़ के नीचे दबने का समाचार सुनकर उसे देखने की इच्छा से दौड़े चले आते हैं। कवियों व शायरों के स्वभाव पर भी व्यंग्य है। वे समय, अवसर देखे बिना अपनी शायरी सुनाने को व्याकुल रहते हैं। उन्हें श्रोता की दशा व मानसिकता से कोई मतलब ही नहीं होता।

अथवा

(क) नेहरू जी किसानों को उनकी निजी समस्याओं जैसे—गरीबी, कर्ज, शोषण, जमींदारों और महाजनों द्वारा किया गया शोषण, उनसे कठोरतापूर्वक लगान का लिया जाना, अधिक ब्याज लिया जाना और पुलिस द्वारा किए अत्याचार से परिचित कराते थे। वे प्रेरित करते कि कैसे विदेशी शासन से छुटकारा मिल सकता है।

(ख) नेहरू जी किसानों के दृष्टिकोण में व्यापकता लाने का प्रयास करते। वे चाहते थे कि किसान अपने गाँव, जिले, प्रान्त की

सीमा से ऊपर उठकर पूरे भारत के बारे में सोचें और स्वयं को उसका अंग समझें।

(ग) नेहरू जी अन्य देशों का हवाला इसलिए देते थे—

(i) उन्हें अपनी समस्याओं के विरुद्ध, संघर्ष करने के लिए तैयार करने हेतु तथा

(ii) उन्हें भारत का ही नहीं अपितु पूरे विश्व का अंग बनाने हेतु।

11. (क) भारत में बंग-भंग या बंगाल-विभाजन की घटना ऐतिहासिक महत्त्व की है। लार्ड कर्जन ने नित-प्रति होने वाली क्रान्तिकारी घटनाओं को रोकने के लिए एक कूटनीतिज्ञ योजना बनाई पर जनता उसका कलुषित इरादा समझ गयी। अतः बंगाल की आठ करोड़ जनता ने इसका विरोध किया, पूरा भारत इसके विरुद्ध खड़ा हो गया। इसने स्वतंत्रता आन्दोलन की चिंगारी को और अधिक भड़का दिया।

(ख) धनराम को मोहन के हथौड़ा चलाने और लोहे की छड़ को गोलाई देने की बात पर आश्चर्य हुआ। उसे मोहन के निरभिमानी व्यवहार पर आश्चर्य हुआ। मोहन पुरोहित खानदान का पुत्र था। फिर भी निम्न काम से परहेज न था।

(ग) स्कूली अध्यापकों द्वारा बच्चों को जबरदस्ती ट्यूशन पढ़ाने के लिए विवश करने के विरुद्ध जन-जागरण करना।

(घ) आज व्यवसाय प्रधान युग में हर कला व कलाकार बिक रहा है। चित्रकला का भविष्य उज्ज्वल है। इस बात की संभावना तो कम है कि अब यह कला व्यावसायिक न होकर अंतरात्मा को अभिव्यक्त करेगी परन्तु इस कला की निरन्तर उन्नति होती जाएगी।

12. कुमार गंधर्व के अनुसार, चाहे चित्रपट संगीत हो या शास्त्रीय संगीत – सबका मूल आधार 'रंजकता' होनी चाहिए। संगीत आम लोगों का मनोरंजन कर पाने में समर्थ हो, मस्ती, तन्मयता व मधुरता से परिपूर्ण होना चाहिए।

13. (i) बेबी की व्यक्तिगत समस्याओं के साथ सामाजिक मुद्दे हैं—

(क) पुरुष के बिना अकेली स्त्री के अस्तित्व को आदर से नहीं स्वीकारना, मदद के स्थान पर परेशान करना मासिकता बन गयी है।

(ख) सार्वजनिक शौचालयों का अभाव स्त्री के लिए महादुःखदायी है। गर्भावस्था या मासिकी या प्रसव के समय तो स्त्री के लिए नर्क की यातना बन जाती है जिसे समाज नहीं समझता है।

(ii) शास्त्रीय संगीत के ताल गम्भीर होते हैं। चित्रपट संगीत में प्राथमिक अवस्था के तालों का प्रयोग होता है। शास्त्रीय संगीत के ताल शास्त्र शुद्ध और परिपक्व होते हैं जबकि चित्रपट संगीत के ताल आधे सुगम तथा लोचदार होते हैं। चित्रपट संगीत में सुलभता लोच और रंजकता पर बल दिया जाता है। उसमें आघात और लय को अधिक महत्त्व दिया जाता है।



